International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय संस्कृति और संस्कार

डॉ कुंवर लाल मीणा
अ सस्टेंट प्रोफेसर ,संस्कृत
संस्कृत राजकीय महा वद्यालय करौली

सार

भारतीय संस्कृति वश्व संस्कृतियों का मूलाधार है। संस्कृति से तात्पर्य प्राचीन काल से चले आ रहे संस्कारों से है। मनुष्य द्वारा लौ कक-पारलौ कक वकास के लए कया गया आचार- वचार ही संस्कृति है। सनातन परंपरा के अनुरूप संस्कार की पद्धति ही संस्कृति है। अन्य साहित्य ग्रन्थों को छोड़ दिया जाय तो प्रथम क व द्वारा र चत रामायण के अन्तर्गत व भन्न वषयों का अवलोकन अध्ययनोपरांत प्रत्यक्ष होने लगता है । इसी वचारधारा के अनुरूप साहित्य जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरित करती रहती है। इसी दार्शनिक सद्धांत का अतुल भण्डार मह र्ष वाल्मी क के चरित्र में वद्यमान है । एतदर्थ मह र्ष वाल्मी क का परिचय सर्वप्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

प्रमुख शब्द : भारतीय , संस्कृति

भू मका

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'वाल्मीकीय रामायण एवं रामकथा श्रत नाटकों में हनुमान : एक समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत मह र्ष वाल्मी क एक परिचय जिसे आदिक व द्वारा प्रस्तुत कया गया रामायण भारतीय संस्कृति का महान संवाहक है । चूँ क साहित्य समाज का दर्पण होता है और संस्कृति की आत्मा साहित्य के अन्दर दिखलायी देती है । अत: संस्कृत साहित्य इस सद्धांत को पूर्णरूप से अंगीकार करता है। संस्कृत काव्य जीवन के वषम परिस्थितियों के अन्दर आनन्दानुभव में सदा लगी रही । अन्य साहित्य ग्रन्थों को छोड़ दिया जाय तो प्रथम क व द्वारा र चत रामायण के अन्तर्गत व भन्न वषयों का अवलोकन अध्ययनोपरांत प्रत्यक्ष होने लगता है । इसी वचारधारा के अनुरूप साहित्य जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरित करती रहती है। इसी दार्शनिक सद्धांत का अतुल भण्डार मह र्ष वाल्मी क के चरित्र में वद्यमान है । एतदर्थ मह र्ष वाल्मी क का परिचय सर्वप्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिचय

वाल्मीकीय रामायण में मह र्ष वाल्मी क ने स्वयं अपने को प्रचेता का पुत्र कहा है-

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन । १

मनुस्मृति में प्रचेता को व शष्ठ, नारद, पुलस्त्य आदि की श्रेणी में रखा गया है । प्रचेता का नाम ब्रह्मा भी है—

प्रचेतसं व शष्ठं च भृगुं नारदमेव च ।

स्कन्दपुराण के वैशाख महात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याध बताया गया है । इससे सद्ध होता है क जन्मान्तर में ये व्याध थे । व्याध जन्म के पहले भी स्तम्भ नाम के श्रीवत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे । व्याध जन्म में शङ्ख ऋ ष के सत्सङ्ग से रामनाम के जप से ये दूसरे जन्म में अग्नि शर्मा हुए, जिनका दूसरा नाम रत्नाकर भी था । वहाँ भी व्याधों के सङ्ग के कारण प्राक्तन संस्कारवश व्याधकर्म में लग गये । फर सप्त र्षयों के सत्सङ्ग से मरा-मरा जपकर - बांबी पड़ने से वाल्मी क नाम से ख्यात हुए और वाल्मी क रामायण की रचना की । बंगला के कृतिवास रामायण, अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण तथा भ वष्यपुराण में भी उपर्युक्त प्रसंग का उल्लेख थोड़ा हेर-फेर करके मलता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

उल्टा नाम जपत जग जाना ।

बाल्मी क भये ब्रह्म समाना । ।

पण्डित वैद्यनाथ द् ववेदी जी ने अपनी पुस्तक' में लखा है क- 'मह र्ष वाल्मी क के सम्बन्ध में रामायण में मुनि मुनि पुंगव, ऋ ष, मह र्ष, ऋ षसत्तम, तपस्वी आदि गुणवाचक शब्दों का प्रयोग हुआ है, कन्तु उनके जातिवाचक कसी शब्द का सुस्पष्ट आख्यान नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता । क्यों क वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड के सत्तानबेवें सर्ग के–

प्रत्ययस्तु मम ब्रह्मस्तव वाक्यैरकल्मषैः ।

सेयं लोकभयाद् ब्रह्मन् अपापेत्य भजानता ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन श्लोकों में श्रीराम ने स्वयं अपने मुख से वाल्मी क को 'ब्रह्मन्' शब्द से सम्बोधन कर उनके ब्राह्मणत्व का स्पष्ट उद्घोष कर दिया है। रामायण में बालकाण्ड के द् वतीय सर्ग में उल्लेख है क भरद्वाज ऋ ष मह र्ष वाल्मी क के शष्य थे, जिन्हें अयोध्याकाण्ड में ब्राह्मण भरद्वाज कहा गया है-

स ब्राह्मणस्याश्रममभ्युपेत्य महोत्मनो देवपुरोहितस्य।

ददर्श रम्योटजवृक्षदेश महद्वनं वप्रवरस्य रम्यम्।।

उपर्युक्त श्लोक से भरद्वाज का ब्राह्मणत्व स्पष्ट प्रमा णत है। शास्त्रीय नियमानुसार कोई भी ब्राह्मण शष्य ब्राह्मणेतर को गुरु बनाकर उससे सामान्यतया वद्याध्ययन नहीं कर सकता। ब्राह्मणेतर को वद्यादान का अ धकार भी नहीं प्राप्त है। छान्दोग्य ब्राह्मण में कहा गया है। यथा—

वद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम तवाहमस्मि त्वं मा

पालयानर्हते मानिनेनैव मादा गोपाय मां श्रेयसी तवाहमस्मि।

इससे स्पष्ट है क वद्या- दान का अ धकार यथाशास्त्र ब्राह्मण को ही है। मह र्ष वाल्मी क ने सांगवेदों का अध्यापन भारद्वाज को ही नहीं अ पतु कुश, लव आदि को भी कराया था। पद्मपुराण में तो मह र्ष वाल्मी क ने 'वेदान् सांगानहं सर्वान् ग्राह्यामास भूपते इस युक्ति से स्वयं स्वीकार कया है क मैंने कुश, लव को व्याकरण आदि सभी अङ्गों के सहित चारों वेदों का अध्ययन कराया है। इस प्रकार अर्थापत्ति आदि प्रमाणों के आधार पर भी मह र्ष वाल्मी क का ब्राह्मणत्व सद्ध हो जाता है।

अ प च- पद्मपुराण के पातालखण्ड का यह श्लोक भी मह र्ष वाल्मी क के वशुद्ध रूप से ब्राह्मणत्व के आख्यान हेतु उपस्थित होता है-

एकदागतवान वप्रो वाल्मी क व पनं महत्।

यत्र तालस्तमालाश्च कंशुकाः पत्र पुष्पिता।।

इस श्लोक के माध्यम से मह र्ष वेदव्यास ने मह र्ष वाल्मी क के ब्राह्मणत्व का कण्ठत: आख्यान कया है। इससे यह भी सद्ध होता है क इनकी उत्पादक परम्परा भी वशुद्ध रूप से ब्राह्मण ही रही।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क्यों क 'ब्राह्मण-ब्राह्मणी से जो सन्तान उत्पन्न होती है वही ब्राह्मण हो सकता है ।' ऐसा शास्त्रों का प्रबल उद्घोष है—

सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि स जातयः ।

तथा - सर्व वर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षत योनिषु ।

आतुलोम्येन संभूता जात्वा ज्ञेयास्त एव ते ।।

आदि के द्वारा मनु-याज्ञवल्क्य आदि ऋ षयों ने स्पष्ट व्यवस्था दी है क – व धवत् ववाहित सजातीय पत्नी में स्वद्वारा उत्पादित सन्तान ही सजातीय हो सकती है, अन्य नहीं । तात्पर्य यह है क इनके माता- पता भी ब्राह्मण ही थे । अत: वाल्मी क को निम्न जाति का मानना सर्वथा अनु चत है ।

अक्षय कुमार बन्द्योपाध्याय के अनुसार - 'पूर्वजन्म के प्रभाव से जो रत्नाकर डाकू थे, वे ही महापुरुष के सङ्ग के प्रभाव से मह र्ष वाल्मी क हो गये । उनकी दस्युता साधु के प्राणों पर आघात करने जाकर स्वयं साधुता में परि णत हो गई । वे इतने दिनों तक का मनी काञ्चन में आसक्त थे । दूसरों को पी ड़त करने और उनका धन लूटने में ही उन्हें आनन्द मलता था । उनकी वह आसक्ति और आनन्द महापुरुष की कृपा से तिरोहित हो गया । वे सत् चत् शवानन्द रस का संधान पाकर उसमें निमज्जित हो गये । संसार को भूलकर, शरीर को भूलकर और अपने पूर्वजन्म की सारी स्मृतियाँ मटा कर वे अपने में ही डूब गये ।

अपनी अन्तरात्मा के भीतर ही नि खल-रसामृत सन्धु का आस्वादन करने लगे । इस आस्वादन से जब उनका हृदय परितृप्त हो गया तब उस आनन्द को संसार में वतरित करने के लए उनका प्राण आकुल हो उठा । उन्होंने अपने हृदय द्वारा वश्व के हृदय में जिस नित्य सत्चित्घन प्रेमानन्दमय रसनिर्झर की दिव्यानुभूति प्राप्त की, उसी रसधारा से जगत के सभी श्रे णयों के स्त्री-पुरुषों के हृदय को पूत परिप्लुत और सुस्निग्ध करने की लालसा से वे उन्मत्त हो गये । अपना आन्तरिक आनन्द वतरित करके वश्व के सकल नर-नारियों का जीवन आनन्दमय बनाने की महती कामना ने उनके चत्त को आ वष्ट कर लया । वे ध्यान समा ध के उच्च शखर से साधारण ज्ञानभू म पर अवतीर्ण हुए। वश्व के प्रति अहैतुक प्रेम, आनन्द भक्षु वभ्रान्तदृष्टि आत्म वस्मृत नर-नारी के प्रति हार्दिक सम्वेदना, सम्पूर्ण दु:खी नर-नारियों को अपने अन्तरानन्द का भागी बनाने के लए आकुल आग्रह-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन सबने ध्यानमग्न ऋ ष का ध्यान भंग कर उन्हें मुखर कर दिया, उन्हें आदिक व बनाकर छोड़ा । सत्चित्शिवानन्द प्रया देवी सरस्वती ने मह र्ष के मन और वाणी को आ वष्ट कर लया । मह र्ष महाक व हो गये - वधाता के अ चन्तनीय वधान से वे भारतीय संस्कृति के आदि महाक व हुए ।

जीवनवृत्त

रामायण में उसके रचयिता वाल्मी क का नाम व भन्न स्थलों पर आया है । पर उनके जीवनवृत्त का स्पष्ट संकेत यहाँ नहीं मलता। दूसरे स्रोतों से भी जीवनवृत्तान्त की प्रामा णक सामग्री का नितान्त अभाव है । फर भी उपलब्ध साम ग्रयों को ही एकत्र कर इनका जीवन परिचय प्राप्त कया जा सकता है । वाल्मी क नामधारी कई व्यक्तियों का उल्लेख व भन्न ग्रन्थों में मलता है ।

तैत्तिरीय प्रातिशाख्य में इस नाम के एक वैयाकरण का उल्लेख है । पर वाल्मी कर चत कोई व्याकरण ग्रन्थ ज्ञात नहीं है । अत: यह आदिक व से भन्न कोई रहा होगा ।' पं० कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी ने प्राकृत व्याकरण के सूत्रों का व्याख्याका वाल्मी क को माना है । पर भ नाथ स्वामी ने उसे त्रि वक्रम तथा पं० बलदेव उपाध्याय ने उसे रामायणकार से भन्न वाल्मी क स्वीकार कया है ।

वाल्मी क के पूर्वज, बुद्ध-चरित के अनुसार, च्यवन थे । (१/४३) वाल्मी क से महाभारत में च्यवन के पता भृगु का उल्लेख है जो तपस्या करते हुए आच्छादित हो गये थे । सुकन्या ने उन्हें अन्धा बनाकर उनसे ववाह कया । कृत्तवासीय रामायण के अनुसार इन्हीं के पुत्र रत्नाकर थे जिन्हें व्याध कहा गया है।

आनन्द रामायण तथा स्कन्दपुराण में इनके पता का नाम कृणु बताया गया है जो शरीर पर वल्मी क लगने के कारण वाल्मी क कहलाये तथा इन्हीं से वाल्मी क नामक व्याध उत्पन्न हुआ जिससे ख्यातिप्राप्त रामकथा की रचना हुई स्कन्दपुराण के एक खण्ड में इनके पता का नाम शमीमुख भी मलता है तथा वाल्मी क रामायण में प्रचेता । (७/९६/१९) रामायण में च्यवन का भी उल्लेख मलता है जिन्हें वप्र तथा भृगु नन्दन भी कहा गया है । (७/६७/१) यहाँ भृगु-पुत्र च्यवन सम्भवत: वाल्मी क के ही पता हैं जैसा अन्य प्रमाणों से स्पष्ट होता है । शमीमुख तथा प्रचेता भी इनके ही दूसरे नाम लगते हैं क्यों क दोनों का अर्थ है- तेज या चेतनायुक्त । अतः इनके पता का नाम मूलतः च्यवन रहा होगा जिन्हें कृणु, शमीमुख, प्रचेता आदि भी कहा जाता होगा । वाल्मी क के भी अनेक नाम मलते हैं । वष्णुपुराण में इन्हें भार्गवाक्ष कहा गया है । (३/३/१८) महाभारत में भी भार्गव का उल्लेख है जो पहले श्लोक लखते थे । यहीं एक दूसरे पर्व में एक पुराने क व वाल्मी क का भी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उल्लेख मलता है । (द्रोणपर्व ११८/४८) मत्स्यपुराण में इन्हें भार्गव सत्तम कहा गया है । (१२/६१) जैसा पहले कहा जा चुका है कृत्तवासीय रामायण में इनका नाम रत्नाकर बताया गया है । स्कन्दपुराण इनके नाम वैशाख (प्रमा० महा० अध्याय २७८) मलते हैं । भार्गव शब्द इनके लए प्रयुक्त नामों के साथ सम्भवत: इस लए जोड़ा गया क ये भृगुवंशीय थे जैसा ऊपर कहा गया है । अत: इनके पता की तरह पहले इनके भी कक्ष, सत्तम, रत्नाकर आदि कई नाम रहे होंगे । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार यही पीछे दीमक की बांबी (वल्मीक) से आच्छादित होकर बाहर निकलने के कारण वाल्मी क नाम से प्र सद्ध हुए होंगे ।

इनकी जाति के सम्बन्ध में भी बड़ी अनिश्चितता है । इन्हें स्कन्दपुराण में ब्राह्मण (अध्याय २७८), द् वज (नागर खण्ड, अध्याय १४) व्याध (वैष्णव खण्ड, अध्याय २१) आदि कहा गया है । आनन्द रामायण में इन्हें एक स्थान पर ब्राह्मण तथा दूसरे स्थान पर व्याध कहा गया है । इनका प्रारम्भिक जीवन प्राय: अज्ञात है | आनन्द रामायण के अनुसार व्याध वाल्मी क ने शंख नामक ब्राह्मण का सब कुछ लूट लया था पर उनके फटे पैरों को देखकर उन्हें उनका जूता लौटा दिया । इस पर ब्राह्मण ने बताया क यह व्याध पूर्वजन्म में शाकल नगर में श्रावस्ती गोत्र का स्तंभ नामक ब्राह्मण था । पीछे यह वेश्यागामी होकर शूद्राचार करने लगा । कसी दिन इसने एक ब्राह्मण का आतिथ्य कया था । इसी पुण्य कारण आज मुझसे इसकी भेंट हुई है । यह वेश्या का स्मरण करते हुए मरकर व्याध परिवार में उत्पन्न हुआ है और वही वेश्या अब इसकी पत्नी भीलनी है । यह कृणु मुनि के नेत्र से गर्भ द्वारा स र्पणी के पेट से उत्पन्न होंगे तथा करात इनका पालन करेंगे। इनकी सात मुनियों से भेंट होगी । अध्यात्म रामायण में इसके आगे यह भी ववरण मलता है क इन सात मुनियों के लूटे जाने पर उन्होंने वाल्मी क से इस पाप के भागीदारों के सम्बन्ध में पूछा । वाल्मी क को अपने परिवार वालों से इस प्रश्न के उत्तर में ज्ञात हुआ क जो पाप करेगा वही उसे भोगेगा । इससे उन्हें वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह मुनियों में स्थिरप्रज्ञ होकर राम नाम को उल्टाकर जपने लगे । ऐसा करते हुए उनके शरीर पर बांबी बन गई । वे मुनि पुनः जब उस रास्ते से लौटे तो वल्मीक से उन्हें निकाल कर उसका नाम वाल्मी क रखा । यह उनका दूसरा जन्म हुआ । यही कथा नाम तथा घटनाओं के कुछ अन्तर से स्कन्दपुराण के व भन्न खण्डों, कृत्तवासीय रामायण, महाभारत (अनुशासन पर्व) आदि में भी मलती है।

इसके बाद का वृत्तान्त कुछ रामायण से प्राप्त होता है क वह तमसा के तट पर जहाँ से गंगा थोड़ी दूर थीं वहीं अपने शष्य भरद्वाज के साथ रहते थे । वहीं एक दिन स्नान के लए जाते हुए उन्होंने एक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्याध द्वारा आहत क्रौंच पक्षी को देखा जिस पर क्रौंची वलाप कर रही थी । इस पर शोकाकुल होकर उनके मुँह से व धक के लए — मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः... ' श्लोक में शाप निकला जो आदिकाव्य की भू मका बना । इसी पर वचार करते हुए क व को नारद ने रामायण की भू मका दी तथा ब्रह्मा ने इसकी रचना का आदेश दिया, जिनके आधार पर रामायण की रचना हुई ।

आदिक व के आश्रम का स्थान भी बड़ा ववादास्पद है। रामायण में इसके सम्बन्ध में तीन ववरण मलते हैं - तमसा तट पर, चत्रकूट में— जहाँ वनवासी राम वाल्मी क से मले थे (२/५६/१६) तथा गंगा के द क्षण कनारे पर जहाँ निर्वा सत सीता रहती थीं। (७/४७/१७) कई आश्रमों की बात व चत्र नहीं लगती क्यों क ऋ ष प्रायः घूमते रहते थे । जहाँ जाते थे वहाँ अपने लए आश्रम बना लेते थे । जैसे— रामायण में व र्णत वश्वा मत्र पहले सद्धाश्रम में रहते थे जो पीछे हिमालय पर चले गये । (१/७४/१) डॉ० मराशी ने चत्रकूट के आश्रम को प्र क्षप्त माना है ।' डॉ० पी० एल० वैद्य के अनुसार भी चूँ क यह पाठ केवल दा क्षणात्य संस्करण में पाया जाता है, अतः निर्मूल है। ऐसी दशा में जब तक इस तर्क के सम्बन्ध में और कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मलते तब तक इसको अन्तिम निर्णय के रूप में स्वीकार कर लेना उ चत नहीं जान पड़ता । डॉ० मराशी ने बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के ववरणों को मलाकर इनके आश्रम के निर्धारण के लए चार आधार बनाया है—

- आश्रम तमसा तीर पर था ।
- समीप में गंगा नदी थी ।
- गंगा के द क्षणी तीर पर आश्रम था जहाँ निर्वा सत सीता का परित्याग हुआ था ।
- अयोध्या के समीप था ।

इन आधारों पर प्रयोग से आग्नेय दिशा में १८ मील की दूरी पर उन्होंने गंगा और तमसा के संगम पर उनका आश्रम निर्धारित कया है । अन्य कई वद्वानों का भी मत इससे मलता जुलता दीख पड़ता है पर बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के ववरण इस सम्बन्ध में परस्पर भन्न हैं । बालकाण्ड में उनका आश्रम तमसा के कनारे व र्णत है जहाँ से गंगा दूर बताई गई है (१/२/३) । इस तमसा तट को तीर्थ कहा गया है । जिससे यह स्पष्ट नहीं होता क प वत्र स्थल होने के कारण ऐसा माना गया है अथवा कस कारण से। डॉ० एल०एन० डे ने कानपुर से १४ मील दूर बिठूर में इसे स्वीकार कया है । २ पर डॉ० मराशी ने इसकी बड़ी वद्वतापूर्ण आलोचना अपने लेख में की है । कुछ वद्वानों ने तो अमृतसर के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पास रामतीर्थ नामक स्थान तथा कन्हीं ने भारत नेपाल सीमा पर स्थित वाल्मी कनगर में इसकी स्थिति स्वीकार की है, जो भौगो लक ववरणों के आधार पर बेमेल लगते हैं । बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के ववरण इस सम्बन्ध में परस्पर भन्न हैं । यहाँ ऋ षयों के आश्रमों का वर्णन नहीं है । पर उत्तरकाण्ड में गंगा कनारे ऋ ष आश्रमों के बीच उनका वर्णन मलता है | अतः ये दो आश्रम लगते हैं जिनमें पहले रामायण की रचना हुई थी तथा दूसरे में निर्वा सत सीता रहती थी, तथा लवकुश का जन्म हुआ था। वहीं उन्हें रामायण सुनाने का उपदेश भी दिया गया था। पहला आश्रम बालकाण्ड – उत्तरप्रदेश के ब लया जनपद में हो सकता है जो तमसा के तट पर बसा है तथा यहाँ से गंगा थोड़ी दूर हैं । यह वन्य प्रदेश धर्मारण्य में था । यह अत्यन्त प वत्र स्थान था । पद्मपुराण के अनुसार गंगा के उत्तरतट दर्दर क्षेत्र में (आधुनिक ब लया जनपद) वाल्मी क रहते थे । आज भी यहाँ वालेश्वर घाट पर पुरातन वाल्मी क मन्दिर की परम्परा में एक मन्दिर स्थित है । अत: रामायण की रचना जहाँ पर की गई थी, बालकाण्ड में व र्णत आश्रम ब लया में रहा होगा ।

दूसरा आश्रम उत्तरकाण्ड का, जहाँ लव - कुश का जन्म हुआ था तथा उन्हें रामायण का उपेदश दिया गया था, जैसा डॉ० मराशी का वचार ऊपर व र्णत है, प्रयाग के पास गंगा के द क्षणी तट पर रहा होगा। यदि ये दोनों एक ही होते तो रामायण की रचना से पूर्व वह राम-राम से परि चत रहे होते। फर उन्हें नारद तथा ब्रह्मा की बात सुनकर रामायण की रचना करने में हिच कचाहट क्यों हुई होती । ले कन इसके सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय लेना सम्भव नहीं जान पड़ता । कुछ लोग इसे ईस्वी सन् से दो चार शताब्दी की कृति मानते हैं । इसके पद वन्यास आदि को देखकर कोई पा णनि के बाद की रचना कहता है तो कोई महाभारत के बाद की । वाल्मी क ने स्वयं रामायण के उत्तरकाण्ड में, श्रीराम के यज्ञ में अपने हृष्ट-पुष्ट दो शष्यों अर्थात् कुश और लव से कहा- तुम दोनों भाई एकाग्र चत्त हो सब ओर घूम- फर कर बड़े आनन्द के साथ सम्पूर्ण रामायण काव्य का गान करो-

स शष्यावब्रवीद्धष्टौ युवां गत्वा समाहितो ।

कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां परमा मुदा ।।

तपस्वी वाल्मी क

वाल्मी क रामायण में उपनिबद्ध कथा के अनुसार देव र्ष नारद के मुख से श्रीरामचरित्र को सुनकर, उनको यथावत् सम्मानित करके, मह र्ष वाल्मी क ने उन्हें वदा कया। उनके देवलोक पधारने के दो ही घड़ी बाद मह र्ष वाल्मी क तमसा नदी के तट पर गये, जो गङ्गा जी से अ धक दूर नहीं था । तामसहारिणी तमसा कल-कल करती हुई बह रही थी । उसका पावन तट वृक्षों की स्निग्ध छाया से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शीतल था । तीर्थ में न तो पङ्क कलङ्क की तरह चपका था और न शैवाल दुष्ट जनों की चत्तवृत्ति के समान उसे कलङ् कत कर रहा था । मनो भराम जल सज्जनों की चत्त की भाँति नितान्त प्रसन्न था । मह र्ष के हृदय को इस दृश्य ने लुभा लया । उन्होंने अपने प्रधान शष्य भरद्वाज से कहा क भरद्वाज यह तमसा का तीर्थ प्रसन्न जल से परिपूर्ण साधुपुरुष के मन के समान रमणीय है । यहाँ क्लेश को रख दो और वल्कल वस्त्र मुझे दे दो मैं इसमें स्नान करना चाहता हूँ-

न्यस्यतां क्लशस्तात दीयतां वल्कलं मम ।

इदमेवावगाहिष्ये तमसातीर्थमुत्तमम् ।।

मह र्ष से आदिष्ट होकर शष्य ने वैसा ही कया जैसा क उन्हें अभीष्ट था। उन्होंने स्नानकर, वल्कल पहन वशाल शान्तवन की शोभा देखते हुए भ्रमण करना शुरू कया । उनकी दृष्टि स्वच्छन्द वहरणशील क्रौंच मथुन पर पड़ी जो क रतिभाव से परस्पर समासक्त होकर मधुर ध्वनि कर रहे थे । उसी समय पापपूर्ण वचार रखने वाले एक निषाद ने, जो समस्त जन्तुओं का अकारण बैरी था, वहाँ आकर प क्षयों के उस जोड़े में से एक नर पक्षी को मह र्ष के समक्ष ही बाण से मार डाला। वह पक्षी खून से लथपथ होकर पृथ्वी पर गर पड़ा और पंख फड़फड़ाता हुआ तड़पने लगा । अपने पति की हत्या हुई देख उसकी भार्या क्रौंची करुणाजनक स्वर में चीत्कार कर उठी-

तस्मात् तु मथुनादेकं पुमांसं पापनिश्चयः ।

जघान वैरनिलयो निषादस्तस्य पश्यतः । ।

तं शो णतपरीताङ्ग चेष्टमानं महीतले ।

भार्या तु निहतं दृष्ट्वा रुराव करुणां गरम् ।।

निषाद द्वारा मारे गये उस नर पक्षी की यह दुर्दशा देख धर्मात्मा मह र्ष का हृदय करुणा से द्र वत हो शोकाकुल हो गया । स्वभावतः करुणा का अनुभव करने वाले ब्रह्म र्ष के मुख से रोती हुई क्रौंची को आश्वस्त करने के उद्देश्य से अकस्मात् यह श्लोकात्मक वाग्-वैखरी प्रस्फुटित हुई—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत् क्रौञ्च मथुनादेकमवधी काममोहितम् ।।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निषाद तुझे नित्य निरंतर कभी भी शान्ति न मले, क्यों क तुमने इस क्रौंच के जोड़े में से एक की, जो काम से मोहित हो रहा था, बिना कसी अपराध के ही हत्या कर डाली । ऐसा कहकर जब उन्होने इस पर वचार कया तब उनके मन में यह चन्ता हुई क अरे यह क्या कर डाला ।

पुनः अपने शष्य से बोले - तात ! शोक से पी ड़त हुए मेरे मुख से जो वाक्य निकल पड़ा है, यह चार चरणों में आबद्ध है । इसके प्रत्येक चरण बराबर अक्षर हैं । यानि आठ-आठ अक्षर हैं । इसे वीणा के लय पर भी गाया जा सकता है, अत: यह वचन श्लोकरूप अर्थात् श्लोक नामक छन्द में आबद्ध काव्यरूप होना चाहिए-

पादबद्धोऽक्षरसमस्ततन्त्रीलयसमन्वितः ।

शोकार्त यस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा । ।

मुनि की यह उत्तम बात सुनकर उनके शष्य भरद्वाज को बड़ी प्रसन्नता हुई और बोले— 'हाँ आपका यह वाक्य श्लोकरूप ही होना चाहिए ।' शष्य के इस कथन से मुनि को वशेष सन्तोष हुआ

सम अक्षरयुक्त चार पादों से मण्डित यह श्लोक संस्कृत काव्य-कुमार का उदय है । महाकाव्य की परम्परा का यही मूल स्रोत है । शष्यों सहित तमसा के तट से वापस आकर आसन पर बैठे हुए मह र्ष का ध्यान उसी श्लोक की ओर लगा था। उसी समय अ खल वश्व सृष्टिकर्ता महातेजस्वी चतुर्मुख ब्रह्माजी मुनिवर वाल्मी क से मलने के लए स्वयं उनके आश्रम पर आये-

आजगाम तो ब्रह्मा लोककर्ता स्वयं प्रभुः ।

चतुर्मुखा महातेजा द्रष्टुं तं मुनिपुङ्गवम् ।।

रामायण का सं क्षप्त परिचय

वाल्मी क रामायण के प्रकरण में आजकल भन्न- भन्न मत द्रष्टव्य हैं । यद्य प रामायण के अन्तरङ्ग प्रमाणों तथा वाह्य कारणों पर भी वचार करने से रामायण श्रीराम के ही समय का बना सद्ध होता है । तथा प कुछ लोग इसे ईस्वी सन से दो चार शताब्दी की कृति मानते हैं । इसके पद वन्यास आदि को देखकर कोई पा णनि के बाद की रचना कहता है तो कोई महाभारत के बाद की । वाल्मी क ने स्वयं रामायण के उत्तरकाण्ड में, श्रीराम के यज्ञ में अपने ह्रष्ट-पुष्ट दो शष्यों अर्थात् कुश और लव से कहा- तुम दोनों भाई एकाग्र चत्त हो सब ओर घूम- फर कर बड़े आनन्द के साथ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्पूर्ण रामायण काव्य का गान करो। इससे सद्ध होता है क रामायण की रचना मह र्ष वाल्मी क ने श्रीराम के समय में ही की थी । यह भी प्र सद्ध है क मह र्ष व्यास जी ने यु धष्ठिर के अनुरोध से वाल्मी क रामायण पर एक व्याख्या लखी है। इसकी हस्त ल खत एक प्रति आज भी प्राप्त है जिसका नाम 'रामायणतात्पर्यदी पका' है । इसका उल्लेख दीवान बहादुर रामशास्त्री ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन रामायण' के द् वतीय खण्ड में कया है ।' अग्निपुराण में भी वाल्मी क के नामोल्लेखपूर्वक रामायण सार का वर्णन है ।और उसकी प्राप्ति से सन्तप्त यु धष्ठिर को उनकी इच्छानुसार मार्कण्डेय उनको रामचरित सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त रामायण एवं महाभारत के सामाजिक, राजनैतिक एवं धा र्मक परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर भी रामायण महाभारत से पूर्ववर्ती सद्ध होता है ।

वाल्मी क पा णनि के पूर्ववर्ती थे या परवर्ती इस वषय में मतभेद है। यदि वाल्मी क पा णनि से पूर्ववर्ती थे तो उनका उल्लेख पा णनि को करना चाहिए था । क्या यह सम्भव है क सर्वोत्कृष्ट काव्यकर्त्ता वाल्मी क को वस्मृत कया जा सकता है ? इस सम्बन्ध में याकोबी वस्तृत वर्णन करते हुए वाल्मी क को पा णनि का पूर्ववर्ती ही मानते हैं । वाल्मी क पूर्ववर्ती इस लए थे क पा णनि ने कौशल्या, कैकय, सरयू आदि का उल्लेख कया है कन्तु वाल्मी क एवं रामायण का नहीं । यदि वाल्मी क परवर्ती थे तो उन्होंने पा णनि के व्याकरण नियमों का पालन क्यों नहीं कया ?' कृ र्म एवं दुंदु भ का अपा णनीय प्रयोग क्यों कया ? इसके समाधान में कहा है क ऋ ष कसी नियम से बद्ध नहीं होता । उस समय संस्कृत भाषा अ धक रूढ़िग्रस्त न रही होगी । दुंदु भ तथा कृ र्म जैसे प्रयोगों को अशुद्ध न समझा जाता रहा होगा ।

स्कन्दपुराण में श्रीव्यासदेव जी ने वाल्मी क की जीवनी भी बड़ी श्रद्धा से लखी है ।' वस्तृत रूप से आध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड में वाल्मी क रामायण का वर्णन कया गया है । भार्गवसत्तम कहकर मत्स्यपुराण में भी वर्णन कया गया है।' क व कुलगुरु ने रघुवंश में आदिक व का स्मरण कया है ।

निष्कर्ष

रामकथा भारतीय जनजीवन में पूर्णतः परिव्याप्त है । राम के चारित्रिक गुणों का महत्व जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है । इस कथा का वशद एवं व्यवस्थित रूप आदिक व वाल्मी क की रचना रामायण में उपलब्ध होता है । वाल्मी क ने राम जैसे उदार और पावन चरित्र को काव्य का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आश्रय बनाकर भारतीय संस्कृति में एक नया मोड़ नहीं दिया अ पतु एक ऐसे साहित्य के अ वरल प्रवाह को प्रवृत्त कया है, जो आज भी निर्बाध गति से प्रभा वत हो रहा है रामायण के माध्यम से ही राम का महान व्यक्तित्व इतनी महती रोचकता और लोक प्रयता को प्राप्त हुआ क भारतीय जनमानस तो राममय हुआ ही साथ ही इसने वदे शयों तथा उनके साहित्य को भी प्रभा वत कया है ।

वाल्मी क के ही समय में रामकथा सम्बन्धी कथानक का पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार हो चुका था। अतएव वाल्मी क ने तत्कालीन प्रच लत आख्यानों एवं पुरावृतों को ही आधार मान कर रामायण की रचना की है । हनुमान जी का इसमें प्रत्यक्ष रूप से वशेष स्थान रहा है । आदिक व वाल्मी क की कृति संस्कृत साहित्य की धरोहर है ।' रामायण एवं महाभारत ऐसी कृतियाँ हैं, जिनके प्रभाव से संस्कृत साहित्य का शायद ही कोई ऐसा क व हो जो वरत रहा हो । ये दोनों कृतियाँ भारतीय संस्कृति एवं साधना के शाश्वत मूल्यों के जीवन्त निदर्शन हैं।

सन्द र्भत ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकीय रामायण
2. उपलब्ध पुराण साहित्य
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास - आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - वाचस्पति गैरोला
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास - क पलदेव द् ववेदी
6. महाभारत - श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास
7. रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास
8. भगवतीभाष्य वाल्मीकीयरामायण - जगदीश्वरानन्द
9. जातक साहित्य - दशरथ जातक, अनामक जातक और दशरथ कथानक
10. हेमचन्द्र कृत - जैन रामायण
11. का लदास कृत रघुवंश महाकाव्य
12. प्रमुख रामकथा श्रत नाटक - भास कृत - प्रतिमा नाटक एवं अ भषेक नाटक
13. प्रमुख रामकथा श्रत नाटक - भवभूति कृत - महावीर चरित
14. प्रमुख रामकथा श्रत नाटक - अनंग हर्ष मयुराज कृत - उदात्त राघव
15. प्रमुख रामकथा श्रत नाटक - राजशेखर कृत - बालरामायण
16. प्रमुख रामकथा श्रत नाटक - दामोदर मश्र कृत- महानाटक
17. का मल बुल्के कृत - रामकथा